विविध आवश्यकताओं वाले बच्चे | एक शिक्षक क्या कर सकता है

शौर्या बटारिया

बाल विकास, विशेष ज़रूरतें और सीखना[1] के सात महीने के कोर्स के लिए मेरे असाइनमेंट के रूप में, मैंने मध्य प्रदेश के होशंगाबाद जिले के बोरकुण्डा गाँव में रहने वाले देवराज नाम के बच्चे की केस स्टडी ली। गाँव में लगभग 1000-1200 लोगों की आदिवासी आबादी है और उनमें से अधिकांश दिहाड़ी मज़दूर हैं। देवराज 11 साल का लड़का है जिसके दाहिने हाथ में विकलांगता है। जब वह बहुत छोटा था तब उसके माता-पिता ने उसकी विकलांगता के कारण उसे छोड़ दिया था। वह अपनी नानी के साथ रहता है। देवराज के पास कोई पहचान प्रमाण (जन्म प्रमाण पत्र या आधार कार्ड) नहीं है जिसके कारण वह सभी सरकारी लाभों और योजनाओं से वंचित है। गाँव के सरकारी स्कूल के शिक्षक ने ग्राम पंचायत सचिव के पत्र के आधार पर उसका दाख़िला स्कूल में कराया है। वह नियमित रूप से स्कूल नहीं जाता है। पूरा दिन अपने दोस्त गोपी के साथ घूमने और खेलने में बिताना पसन्द करता है।

एक समय में एक क़दम

मैंने उसकी नानी, उसके शिक्षक और गाँव के लोगों से उसके सामाजिक, मानसिक और भावनात्मक व्यवहार के बारे में और जानने की कोशिश की। मुझे पता चला कि वह बहुत बात नहीं करता है और अपने दोस्त गोपी को छोड़कर, किसी अन्य बच्चे के साथ खेलने में सहज महसूस नहीं करता है। उसे पान मसाला खाने की आदत लग गई है (अक्सर उसे ख़रीदने के लिए पैसे माँगते हुए बहुत ग़ुस्से में आ जाता है)।

उसके शिक्षक से मुझे पता चला कि वह पूरे शैक्षणिक वर्ष में एक महीने से भी कम समय के लिए स्कूल गया था। वह कक्षा के अन्दर असहज महसूस करता था और हमेशा बाहर जाना चाहता था इसलिए उसने पढ़ाई में रुचि नहीं दिखाई। ज़्यादातर समय, वह कक्षा में ख़ाली बैठा रहता और पूछे गए किसी भी प्रश्न का उत्तर नहीं देता था। समुदाय के साथ चर्चा के दौरान, मैंने देखा कि उसके आस-पास के लोग उसे दया की भावना से देखते थे और उसके भाग्य को दोषी मानते थे। अन्य बच्चे उस पर धौंस जमाते, मज़ाक उड़ाते और उसे अलग-अलग नामों से पुकारा करते थे।

फिर मैं उससे मिलने उसके घर गई। मैंने उसका घर ढूँढ़ते हुए पड़ोस में पूछा तो उसके पड़ोसियों ने दूर से ही चारपाई पर लेटे लड़के की ओर इशारा करके बताया। जब मैंने उसे पुकारा, तो वह शर्मीली मुस्कान के साथ मेरे पास आया। मैंने ध्यान दिया कि उसके पैर में भी विकलांगता थी।

जब वह मेरी ओर आ रहा था, मेरे दिमाग़ में तरह-तरह के सवाल आने लगे। क्या वह मुझसे खुलकर बात करेगा? क्या मैं उसकी मदद कर पाऊँगी क्योंकि मैं पहली बार किसी विकलांग बच्चे के साथ सीधे तौर पर काम कर रही थी? क्या वह अपने परिवार द्वारा झेली गई चुनौतियों पर बात करने में सहज होगा? क्या परिवार को लगेगा कि मैं सिर्फ़ अपना असाइनमेंट पूरा करने के लिए आई हूँ? अगर मेरे सवालों से उसे पीड़ा हुई तो? मैं इस बारे में सचेत थी कि मुझे इस मामले में किस तरह संवेदनशीलता के साथ आगे बढ़ना है। बहुत धीरे से मैंने उससे दो बार उसका नाम पूछा। उसका पड़ोसी फुसफुसाया, "राजा"; वह पड़ोसी की ओर मुस्कुराया और मासूमियत से भरी उज्ज्वल, चमकती आँखों से मेरी ओर देखा। मैंने अपने प्रश्न को दूसरे तरीक़े से पूछा, "क्या तुम्हारा नाम राजा है?"

"देवराज", उसने पूरे विश्वास के साथ, ज़ोर से और स्पष्टता से कहा। उसकी दमदार आवाज़ से मुझे लगा कि लोग उसके बारे में जो बातें करते हैं, उससे वह नाराज़ है।

कुछ मुलाक़ातों के बाद, मुझे एहसास हुआ कि उसके आस-पास के लोग उसे एहसास कराते हैं कि वह उनसे अलग है और वह कभी भी सामान्य जीवन नहीं जी पाएगा; कि उसकी नानी के बाद, उसकी देखभाल करने वाला कोई नहीं होगा - यह एक ऐसा तथ्य था जिससे वह डरता था। उसके साथ हुए संवादों से मुझे पता चला कि वह ख़ुद को 'विशेष' या किसी ऐसे व्यक्ति के रूप में नहीं देखना चाहता था, जिसे अपने दैनिक कामों में भी मदद की ज़रूरत पड़े। वह नहीं चाहता था कि कोई उसके लिए खेद महसूस करे या 'उसके भाग्य' को दोष दे। वह अपना जीवन पूरी तरह से जीना चाहता था और अन्य सभी बच्चों के जैसा समान व्यवहार पाना चाहता था। देवराज किसी की सहायता नहीं चाहता था; वह सिर्फ़ अपनी स्वीकार्यता चाहता था। उसकी मदद के लिए यह समझना ही काफ़ी नहीं था, लेकिन मुझे अब आगे बढ़ने की दिशा मिल गई थी।

अपनी मुलाक़ातों के दौरान, मैं उसके लिए अधिक सहजता वाली बातें करने की कोशिश करती थी। हमने एक-दूसरे की पसन्द-नापसन्द पर चर्चा की और विभिन्न खेलों और

गतिविधियों का आनन्द लिया। जब हम गेंद खेलते थे तो कभी-कभी मैं उसे अपने दोनों हाथों से भी नहीं पकड़ पाती थी और वहीं वह हर बार गेंद को अपने एक हाथ से पकड़ लेता था। धीरे-धीरे, हमने साथ में अधिक समय बिताना शुरू कर दिया और उसने चित्र बनाना शुरू किया जो उसे बहुत अच्छा लगता है। वह जो कुछ भी करता था, उसमें मुझे कभी नहीं लगा कि उसके द्वारा एक हाथ का पूरी तरह इस्तेमाल न कर पाना उसके लिए किसी तरह से बाधक है। मैंने उसे उसकी ताक़तों को पहचानने और उनकी सराहना करने में मदद की।

हम अच्छी तरह से घुलने-मिलने लगे और एक-दूसरे की उपस्थिति में तनाव मुक्त और प्रेरित महसूस करने लगे। मैं जब भी उसके गाँव जाती तो वह आकर मेरा हाथ पकड़कर सीधे अपने घर ले जाता था और मुझे अपने बनाए हुए चित्र दिखाता था।

धीरे-धीरे, अपने जीवन में और अधिक करने के उसके उत्साह से प्रेरित होकर मैं उसे मोहल्ला लर्निंग एक्टिविटी सेंटर (MohLAC) में ले जाने लगी, ताकि वह नए दोस्त बना सके। यह समुदाय के युवाओं द्वारा संचालित एक सुरक्षित स्थान है जिसे एकलव्य फ़ाउण्डेशन द्वारा प्राथमिक स्कूलों के विद्यार्थियों हेतु कोविड-19 की अवधि के लिए बनाया गया था ताकि वे सार्थक शिक्षा के साथ निरन्तर जुड़ाव बनाए रख सकें।

कुछ अवलोकन

यहाँ एक ख़ास घटना का ज़िक्र करना ज़रूरी है। एक दिन मैंने केन्द्र पर बच्चों को घेरा बनाकर खड़े होने के लिए कहा था। जब विद्यार्थी ऐसा करने में व्यस्त थे, तो मैंने देखा कि एक लड़की देवराज के बगल में खड़ी है और अपने हाथ को इस तरह रख रही है ताकि देवराज का हाथ थाम सके जिससे वह सहज महसूस करे। मैंने महसूस किया कि इस स्वाभाविक दोस्ताना पहल के साथ, वह समाज को एक सुन्दर सबक़ दे रही थी कि समाज को अपने दृष्टिकोण में तब्दीली लाने की ज़रूरत है। लोगों को विकलांग व्यक्तियों के साथ उसी तरह व्यवहार करना चाहिए जैसा वे बाक़ी सभी के साथ करते हैं। हर किसी की अलग-अलग क्षमताएँ होती हैं; कुछ ख़ूबसूरत नृत्य कर सकते हैं और कुछ मीठा गा सकते हैं। तो फिर कुछ लोगों पर 'विशिष्ट रूप से सक्षम' का ठप्पा क्यों लगाया जाता है? यह एक ऐसा प्रश्न है जिसकी समीक्षा की जानी चाहिए।

एक अन्य मौक़े पर, हम एक समूह में बैठे थे और शारीरिक गतिविधि की आवश्यकता वाली कुछ सामूहिक गतिविधियाँ कर रहे थे। देवराज थोड़ा धीमा था, लेकिन ऐसा लग रहा था कि इससे किसी को परेशानी नहीं हो रही थी; वे सभी गतिविधि का आनन्द ले रहे थे।

देवराज नियमित रूप से केन्द्र पर आता था और उसने नए दोस्त भी बनाए। वह मेरी पहचान अपनी दीदी के रूप में करवाता था और जल्द ही, उसके आस-पास के सभी लोग मुझे 'देवराज की दीदी' कहने लगे थे। मुझे ख़ुशी है कि अब दूसरों को यह महसूस नहीं होता या वे उसे यह महसूस नहीं कराते कि अपनी नानी की अनुपस्थिति में अकेला होगा। वर्तमान में, देवराज अपने नए दोस्तों के साथ केन्द्र और अपने स्कूल जाता है। मैं हफ़्ते में एक बार उससे मिलने जाती हूँ और जितना हो सके उसे सहयोग करने की कोशिश करती हूँ।

चित्र-1 : कंकड़ों के उपयोग से गिनना सीखते देवराज के साथ लेखिका।

जैसा कि मैंने पहले उल्लेख किया है, विकलांग बच्चों को मदद की उतनी आवश्यकता नहीं होती, उन्हें आवश्यकता होती है ऐसे व्यक्ति की जो उनके साथ समानुभूति रखे और उनकी 'कठिनाइयों' को सकारात्मक रूप से स्वीकार करे। किसी ऐसे व्यक्ति से प्रोत्साहन, प्यार और देखभाल मिलना, जो उनमें भरोसा करता हो और उन्हें उनकी ताक़त दिखा सकता हो, उनके आत्म-विश्वास, आत्म-छवि और उनके जीवन जीने के तरीक़े के लिए चमत्कार कर सकता है। वे अपनी ज़िन्दगी ख़ुशी और सकारात्मकता के साथ जी सकते हैं। सात अलग-अलग रंग इन्द्रधनुष को सुन्दर बनाते हैं। तो फिर हम यह क्यों चाहते हैं कि सभी बच्चे एक जैसे हों और एक जैसे काम करने में सक्षम हों? विभिन्नता में, विविधता में, सौन्दर्य है। आइए हम व्यक्तिगत भिन्नताओं के लिए अपने मन का दरवाज़ा खोलें और हर व्यक्ति को वैसे ही स्वीकार करें जैसा वह है।

चित्र-2 : मोहल्ला लर्निंग एक्टिविटी सेंटर में देवराज की लिखने में मदद करते हुए।

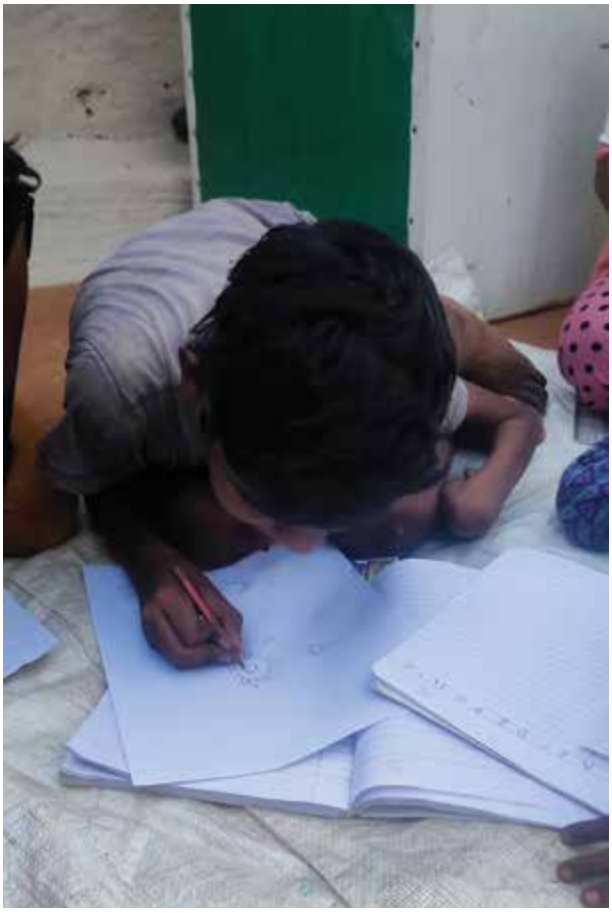

चित्र-3 : देवराज चित्र बनाते हुए।

*बच्चों की पहचान सुरक्षित रखने के लिए नाम बदल दिए गए हैं।

Endnotes

i Eklavya runs a seven-month certificate course in Child Development, Special Needs and Learning – designed and conducted by the senior faculty of Eklavya and Institute of Home Economics, University of Delhi. It focuses on understanding children and childhood, specifically from disadvantaged backgrounds in the Indian context.

शौर्या बटारिया मध्य प्रदेश के होशंगाबाद जिले के सिवनी मालवा ब्लॉक में एकलव्य फ़ाउण्डेशन के साथ एचआईटीईसी प्रोजेक्ट में प्रोजेक्ट असिस्टेंट के रूप में काम करती हैं। उन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय से ग्रेजुएशन किया है और महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक से प्रारम्भिक शिक्षा में डिप्लोमा प्राप्त किया है। शौर्या को प्राथमिक स्कूल के विद्यार्थियों के साथ काम करना, समावेशी वातावरण बनाना और बच्चों को सीखने के नवीन अनुभव देना अच्छा लगता है। उनसे *shaurya.delhi2011@gmail.com* पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : अमित कुमार **पुनरीक्षण :** भरत त्रिपाठी **कॉपी एडिटर :** अनुज उपाध्याय